श्रेष्ठ स्थिति से ही होगा साक्षात्कार

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

ज़्यादातर हमारे सामने सारे दिन में जो बातें आती हैं वो अधिकतर सेम ही होती हैं। इधर कुछ कर दिया, इधर का कुछ सुन लिया। वहाँ का कुछ पता चल गया यह नॉर्मल बातें ही सारा दिन चल रही हैं। जो बड़ी-बड़ी बातें होती हैं उनमें हम बहुत स्थिर रहते हैं। अगर हम सब अपने जीवन काल में देखें जब हमारे जीवन में बड़ी-बड़ी बातें आए तो किसी ने शरीर छोड़ा, कुछ ऐसा बड़ा हुआ तो हमारे संकल्प, हमारी स्थिति बहुत पॉज़िटिव रहती है, उस समय बहुत स्टेबल रहती है। क्यों रहती है,क्योंकि हम हर रोज़ मुरली में सुनते हैं अगर किसी ने शरीर छोड़ा तो ऐसा सोचना है और वह थॉट हमारे अंदर आ जाता है।

अगर कुछ पता चला कि देश में या विश्व में कुछ हुआ है तो ऐसा सोचना है। क्योंकि मालूम है यह होना है लेकिन जो छोटी-छोटी बातें आती हैं उसमें हम गलत सोचते हैं, क्योंकि मुरली में बाबा ने यह नहीं बोला अगर वह बहन ने ऐसा किया तो तुमको ऐसा सोचना है। यहाँ तक कि जब हम मधुबन जाते हैं,बाबा मिलन करते हैं इतना पॉवरफुल एक्सपीरियंस होता है, स्वयं भगवान के सामने हम मिलकर आते हैं, शक्तियों से भर जाते हैं। बाहर आते हैं देखते हैं हमारी चप्पल ही नहीं मिलती है। अब सोचो, करके क्या आ रहे होते हैं और बाहर आकर परिस्थिति कौन-सी होती है। तो चप्पल अगर नहीं मिलती है ना तो कई बार वाय(क्यों) हो जाते हैं बाहर। यह एक रियलाइज़ेशन है कि क्यों चप्पल नहीं मिली और कभी-कभी तो भाई-बहनें तो बाहर जो दूसरी चप्पल पड़ी होती है वही उठाकर पहन कर चले जाते थे, लेकिन मेरी किसी ने ले ली और मैं किसी और की लेकर जा रहा हूँ। हम चले जाते हैं हमें अवेयर नहीं है कि हमने क्या किया! क्या भरकर आए थे, क्या सुन कर आए थे, क्या बनकर आए थे और बाहर आते ही क्या बन गए!

हमें यह अटेंशन देना है कि बाप समान सिर्फ ज्ञान मुरली सुनने-सुनाते समय, योग करने के समय नही हैं, क्योंकि बाबा ने बोला हुआ है कि अंत समय आपका साक्षात्कार होगा सबको और एक मुरली में बाबा ने कहा साधारण कर्म करते हुए साक्षात्कार होगा और उस मुरली में बाबा ने कहा माता घर में पोछा लगा रही होंगी और उसके घर के लोगों को साक्षात्कार हो जाएगा कि हमारे घर में तो कोई देवी रहती हैं। अब जो साक्षात्कार होगा वह चित्र का नहीं होगा, मतलब जो शुरू वाले साक्षात्कार थे वह चित्र के साक्षात्कार थे। उनको सतयुग दिखाई देता था, श्रीकृष्ण दिखाई देता था, सतयुगी देवी-देवता दिखाई देते थे तो ये तो चित्र का साक्षात्कार है, क्योंकि उस समय ज्ञान नहीं था। जब ज्ञान नहीं था, स्थिति नहीं थी, पुरुषार्थ नहीं था तो चित्र का साक्षात्कार हुआ एंड में कौन-सा साक्षात्कार होगा? आपकी स्थिति का साक्षात्कार होगा। वह चित्र का साक्षात्कार था अब चरित्र का साक्षात्कार होगा।

तो वो माता पोछा लगा रही होगी लेकिन उसका हर संकल्प मुरली का संकल्प होगा। उसकी स्थिति अव्यक्त मुरली की स्थिति होगी। वह बाप समान स्थिति में होगी क्योंकि उसके संकल्प सिर्फ वही होंगे। उसके वायब्रेशन से उसके घर के लोगों को साक्षात्कार तो होना ही है। वो रूप साधारण होगा, ड्रेस साधारण होगी, कर्म साधारण होगा लेकिन स्थिति बहुत श्रेष्ठ होगी। वायब्रेशन बहुत ऊंचे होंगे। उनको पता पड़ेगा कि कोई साधारण व्यक्ति नहीं है हमारे घर में। यह तो फरिश्ता हैं, लेकिन ये तभी होगा जब हमारा हर संकल्प, हर कर्म, हमारा व्यवहार बाप समान होगा।

साल बीते, क्या सीखे

- ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

हाल ही में हमारे दो वर्ष कोरोना महामारी में गुज़र गए जिन्होंने हमें बहुत कुछ प्रेरणाएं दीं हमारे आने वाले वर्षों के लिए। बहुत लोग हिम्मत हार कर बैठ गए और बहुतों के दिल में आज भी मशाल जल रही है, और जलनी भी चाहिए क्योंकि ज़िंदगी का सार हारना और हार कर, थक कर बैठ जाना नहीं है। ज़िंदगी का सार है सामना करना, लड़ना, जीतना और अगर हार भी जायें तो भी फिर से उठना और फिर लड़ना। फौज़ी को देखा है कभी? क्या सीख मिलती है उससे? क्या वे अपनी सेना के सैनिकों को जब दम तोड़ते या घायल होते देखते हैं तो क्या वो स्वयं को भी समर्पित कर देता है अपने दुश्मन सेना के सामने या हार मानकर बैठ जाता है? नहीं ना, वो ऐसा तो हरगिज़ नहीं करता। वो लड़ता है अपने आखिर दम तक।

ऐसा ही हमें करना चाहिए। अगर हमारे अपने हमें छोड़कर भी चले गए तो क्या उनके गम में स्वयं हार कर बैठना सही है? ये समझदारी नहीं है। क्योंकि हमारा जीवन भी तो कर्मक्षेत्र है उस सैनिक की तरह। वहाँ(उस युद्ध के मैदान में) हमला होता है दूसरे देश की सेना का और यहाँ हमला होता है स्वयं की सेना का। स्वयं की सेना माना अपने ही मन, बुद्धि जिसके राजा हम स्वयं हैं और ये हमारी प्रजा है। वहाँ हमला करने वाले हथियार हैं- बंदूक, तोप और यहाँ हमला करने वाले हथियार हैं- व्यर्थ व नकारात्मक संकल्प क्योंकि यही तो हमें मार गिराते हैं। एक सैनिक तब तक नहीं हारता जब तक वो स्वयं से न हार माने चाहे फिर सामने से हमला कितना ही भयंकर क्यों न हो ठीक ऐसे ही यहाँ भी एक आत्मा तब तक नहीं हारती जब तक वो स्वयं से न हार मान ले। जैसे वहाँ के सैनिक की प्रतिदिन ट्रेनिंग होती है और साथ ही साथ उनके भोजन का ख्याल हर वक्त रखना होता है। अब सवाल आता है कि हमारी ट्रेनिंग और भोजन क्या है? आइए जानते हैं, देखिये मन का भोजन हमारे संकल्प, बुद्धि का भोजन है ज्ञान। हमारे मन का कार्य है सोचना, इसको हम रोक नहीं सकते परंतु हम इसको दिशा दे सकते हैं। इसकी दिशा हैं उतना ही हम शक्तिशाली बनते हैं। पिछले दो साल में जो व्यक्ति स्वयं के मन से जीत गया वो कोरोना से भी जीत गया था और जो स्वयं से हारा था वो कोरोना से भी हार कर दम तोड़ गया था।

हैप्पी न्यू ईयर करते-करते, हैप्पी ओल्ड ईयर होने आया। वर्ष दौरान क्या हुआ, क्या हमारे किए संकल्प सिद्ध हुए! अच्छा कहाँ कमी रह गई, बीते वर्ष से हमने क्या सीख ली! तो समझ आया कि हर साल यूं ही वर्ष बीतते गए पर कई बार हमने किए संकल्प को पूरा करने का सोचा भी लेकिन फिर हार्ट के ग्राफ की तरह ही दिखाई पड़े। पर इस बार हमने सीख लिया कि मुझे आगे बढ़ना है... इस उमंग-उत्साह के साथ ज़िंदगी को सार्थक करते हुए सफलता के शिखर तक पहुंचना है। अब न रूकना है, न थकना है। बस! संकल्प को साकार करना है और सफल होना है।

पिछले दो साल में सब कैसे अस्त-व्यस्त था, न किसी को अपने कल की कल्पना थी और न ही अपने परिवार की, परंतु आज हम देखें तो सब कुछ फिर से सुधरने लगा है। जो ज़िंदगी अपनी पटरी से उतर चुकी थी वो आज पुनः समय रूपी इंजन लगाकर अपनी पटरी पर पहुंच रही है। कोरोना हमें हराकर, एक कोने में बिठाने नहीं आया था ये तो हम सभी को हिम्मत और विश्वास के पंख देने आया था कि समय कितना भी बदले परंतु आप ये दो पंख कभी मत खोना। कहते हैं किसी के वर्तमान को देख उसके भविष्य की कल्पना मत करना क्योंकि भविष्य में इतनी ताकत है कि वो कोयले की खान को हीरे में बदल सकता है। तो क्या हमारा जीवन नहीं बदल सकता! देखिये मेरा खुद का अनुभव ये कहता है कि समस्या आती ही जाने के लिए है परंतु हम ही उसे सदाकाल का समझ कर हिम्मत खो देते हैं। पहले भी न जाने कितनी महामारियां आई संसार में, तो क्या सभी सदाकाल के लिए रहीं? नहीं ना! वो 2,4,6 वर्षों में खत्म हो ही गयीं ना! सभी यही सिखाकर गयी कि समय भी अपना समय आने पर बदल ही जाता है। कुछ भी स्थाई नहीं है जीवन में।

जो भी हमारे जीवन में होता है सब कल्याणकारी है, ये लाइन भी सदैव याद रखिये। और हाँ ज़िंदगी कभी विद्यालय के अध्यापक की तरह सीधे-सीधे नहीं पढ़ाती, यह सदैव पहले परिस्थिति का उदाहरण देती तत्पश्चात् समझाती है ताकि आपको सदैव काल के लिए इसके पढ़ाये हुए पाठ याद रह सकें। अब आगे कभी परिस्थिति आये तो यही स्मृति रखना कि ये ज़िंदगी अब फिर से नया पाठ, नये उदाहरण के साथ समझा रही है और विशाल बुद्धि बन, धैर्यता से समझने का प्रयास करना और फिर एक दिन आप फतह का झंडा निश्चित रूप से लहरायेंगे, ये हमारा विश्वास है।

हम हर रोज़ ज्ञानामृत का पान करने से बदल सकते हैं और ये ज्ञानामृत है मुरली, जो प्रत्येक दिन हमें, हमारे मीठे बाबा सुनाने आते हैं। वास्तव में यही ज्ञान ऐसा है जो हमें यथार्थ निर्णय लेने में मददगार है। अब हमारी ट्रेनिंग है, हमारा योगाभ्यास। जितना हम मन, बुद्धि की ड्रिल करते हैं माना योग करते हैं उतना हम तंदरूस्त बनते हैं। और सरल शब्दों में कहें कि जितना हम अपने मन की तार परमात्मा से जोड़ते

कोटा जंक्शन-राज.। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को दीपावली की शुभकामनाएं देने के पश्चात् भाई दूज का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन।

सोनीपत से.15-हरियाणा। हरियाणा सरकार एवं सोनीपत जिला प्रबंधक द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण हेतु आयोजित वार्षिक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को भी स्टॉल प्रदान किया। जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सभी किसानों एवं कृषि अधिकारियों को शाश्वत यौगिक खेती की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डीसी ललित सिवाच को ब्र.कु. प्रमोद बहन व ब्र.कु. सुनीता बहन ने ईश्वरीय सौगात भेंट की। इस दौरान एग्रीकल्चर विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अनिल सहरावत, डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर नवीन हुड्डा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कोरापुट-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भक्तबंधु जनार्दन दलेई,ओएएस(एस),सब-कलेक्टर एवं सब-डिविज़नल मजिस्ट्रेट, कोरापुट, श्रीमति मंजुला राउत,ज्वाइंट सेक्रेट्री,ब्यूटी वेलफेयर एसोसिएशन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वर्णा बहन तथा अन्य।

हज़ारीबाग-बड़ा अखाड़ा(झारखण्ड)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गोपाष्ठमी के अवसर पर गौशाला में 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' लगाई गई, जिसमें जिला कलेक्टर नैन्सी सहाय, एसपी मनोज रतन चौथे, अनुमंडल पदाधिकारी विद्या भूषण कुमार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हर्षा बहन तथा अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। गोपाष्ठमी पर आयोजित 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डीएम डॉ. त्यागराजन एसएम, एसडीएओ इंद्रवीर कुमार, समाजसेवी शिवकैलाश डालमिया उर्फ़ मुन्ना डालमिया, चेम्बर के पूर्व अध्यक्ष बिपेंद्र अग्रवाल, सीएओ अनुज कुमार तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला दीदी। कार्यक्रम में अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।